सफलता की कहानी

किसान का नाम - मियाराम सरदार
ग्राम - जामदा
पंचायत - जानमडीह
प्रखण्ड - पोटका
जिला - पूर्वी सिंहभूम

मियाराम सरदार खेती करने के पूर्व दिहाड़ी मजदूर का काम करते थे। हमेशा कहीं न कहीं अन्यत्र काम के तलाश में चला जाता था जिस से परिवार से दूर रहकर काम करना पड़ता था। इनके पास 2 एकड़ खेती योग्य जमीन है जिसमें अधिकतर एक ही मौसम में धान की खेती करते थे। सिंचाई का प्रर्याप्त साधन नहीं होने से भी अन्य फसल का उत्पादन करने में कठिनाई होती थी। सिर्फ एक मौसम में धान की खेती से सिर्फ खाने के लिए अन्न का प्रबंध तो कर लेते पर अन्य आर्थिक जरूरतों का पूर्ति करने के लिए नगद राशि का किल्लत होता था। विगत लॉकडाउन के समय में अन्य किसी जगह काम नहीं मिलने से पारिवारिक स्थिति बिगड़ती जा रही थी।

मियाराम सरदार ने अपने ही खेती योग्य जमीन में ही कुछ अनाज फसल आदि लगाने का फैसला किया। लेकिन किसी प्रकार तकनीकी जानकारी एवं मार्गदर्शन नहीं मिलने से खेती-बाड़ी में काम नहीं कर पा रहे थे। तब अपने गाँव के किसान मित्र के संपर्क में आये उनसे कृषि संबंध में लाभ एवं जानकारी के लिए पुछताछ किया। अपने प्रखंड के प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक के सहयोग से विगत रबी में आत्मा संस्थान से राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजनान्तर्गत सरसों बीज प्राप्त किया।

इसी योजना के तहत मियाराम सरदार ने सिंचाई हेतु पाइप 50 प्रतिशत अनुदान पर प्राप्त किया है। पम्पसेट का व्यवस्था कर अभी सिंचाई के लिए दिक्कत नहीं है।

0.50 डिसमिल जमीन में मियाराम सरदार ने सरसों का खेती किया। समय–समय पर आत्मा के प्रसारकर्मी द्वारा उनके प्रक्षेत्र का भ्रमण कर आवश्यक सुझाव दिया जाता रहा है। जिससे मियाराम सरदार ने अच्छा उपज प्राप्त किया। सरसों का साग के रूप में बेचकर लगभग प्रतिदिन 600 से 700 रूपये का आमदनी इनको प्राप्त होने लगा। आस–पास के सप्ताहिक हाट में साग बेचकर मियाराम सरदार ने लगभग 20,000 रूपये कमा लिए हैं।